

PALLA PROJECT HELPED INCREASE GROUNDWATER LEVEL, SAYS ATISHI

HT Correspondent

letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: Water minister Atishi on Wednesday said that north Delhi's Palla floodplain project has been successful for the fourth consecutive year and has increased up to 1.2 metres of groundwater level. Atishi was inspecting the underground water reservoir and floodplain recharge project in Palla.

The government is also establishing an 8 million gallon per day (MGD) capacity reservoir in Palla. During the inspection, the minister directed officials to conclude the pending work promptly and initiate the operation of this reservoir, a statement from the government said.

The Palla floodplain extends around 25km of the Yamuna north of Wazirabad, and contains aquifers that are perennial sources of drinking water for Delhi. The reservoir project is designed to recharge the city's groundwater table by harvesting floodwaters from the Yamuna during the monsoon season by increasing the percolation rate of groundwater. The minister said that the pond has recharged 740 million gallons of groundwater in 2022-23.

The project spans 40 acre, featuring a pond on 26 acre to collect floodwater to enhance groundwater levels in Delhi. A Delhi Jal Board official said that the objective of the project is to accumulate floodwater to enhance the groundwater level.

City reservoirs have 72% water, Chembarambakkam almost full

T. SUDHEESH | DC
CHENNAI, NOV. 15

As a result of the borth-east nonsoon gaining strength, the storage levels in the key reservoirs which supply water to the city stood at 72.45 per cent, higher than the level in the same period last year. According to Metrowater, the storage is recorded as 9,579 million cubic feet (mcft), while it was 8,772 mcft during the corresponding period last year.

The Chembarambakkam reservoir is almost full with 3,130 mcft against a total capacity of 3,645 mcft. It had 2,835 mcft storage in the same period last year.

The officials with the water resources department (WRD) said that though the water level is down in reservoirs com-

"There is no situation so far in releasing additional water. We still have at least 2 ft more storage capacity"

pared to last year, there is enough water storage to cater to the demands of city residents. "There is no situation so far in releasing additional water. We still have at least 2 ft more storage capacity. We are getting Krishna water from Andhra Pradesh. If there will be a good monsoon season, there will be copious rainfall in catchment areas. We will be forced to release more water only if the capacity breaches, said a senior official.

However, the water level in Redhills reservoir did not witness any increase

and the official stated that water will not be discharged now. The WRD had discharged water from Poondi on September 25 and the outflow gradually decreased due to less rainwater in the catchment area.

In November last year, Poondi reservoir had 1,544 mcft of water, and now it has 1,862 mcft. Cholavaram has 636 mcft compared to 404 mcft last year. Red Hills had 2,794 mcft and has come down to 2,745 mcft. K a n n a n k o t t a i Thervoykandigai had 500 mcft last year and 433 mcft now.

The cumulative storage of Red Hills and Chembarambakkam reservoirs currently is 5,571 mcft against total capacity of 6,876. These two reservoirs meet near-

ly 600 million litres of water a day of total requirement in the city.

V. Santhanam, a social activist, says during the monsoon season every year Chembarambakkam reservoir releases water to prevent deluge.

"But there is no mechanism for saving water once it is released. It drains into the sea through the Adyar river. The sudden release of water from

Chembarambakkam will result in flooding in the city especially in south Chennai. The government should interlink the lakes of south Chennai suburbs. Thiruneermalai, Pallavaram, Chitlapakkam, Sembakka m and Kilkattalai lakes are still there despite few encroachments, he said.

चिंताजनक

भारत, बांग्लादेश व वियतनाम में अत्यधिक हो रहा भूजल दोहन, हालात नाजुक

हर साल 17 घन किमी कम हो रहा भूजल, भू-धंसाव का खतरा

अमर उजाला नेटवर्क

नई दिल्ली। जलवायु परिवर्तन और जनसंख्या वृद्धि के कारण दुनिया भर में जल संसाधनों के उपयोग में वृद्धि हुई है। खेती और शहर अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए तेजी से भूजल की ओर रुख कर रहे हैं। भूजल के पंपिंग के कारण ऊपर की जमीन की सतह धंस सकती है, क्योंकि नीचे के जलभृत सूख जाते हैं और जमीन की वास्तुकला ढह जाती है।

पहली बार एक नए अध्ययन में दुनिया भर में भू-जल भंडारण क्षमता के इस नुकसान का पता लगाया गया है। बिजली पर सविसडी और पानी की अधिकता वाली फसलों के लिए उच्च एमएसपी भी कमी का प्रमुख कारण है।



आर्द्र जलवायु वाले क्षेत्र भी चपेट में...अध्ययनकर्ताओं का कहना है कि शुष्क क्षेत्र ही नहीं बांग्लादेश, भारत और वियतनाम जैसे आर्द्र जलवायु वाले क्षेत्रों में भी भूस्खलन का खतरा अधिक है। इन देशों में भारी भूजल दोहन और अंधाधुंध निर्माण प्रमुख वजह है।

जल प्रदूषण जैसे कि लैंडफिल, सैप्टिक टैंक रिसाव, भूमिगत गैस टैंक और उर्वरकों तथा कीटनाशकों के अत्यधिक

शोधकर्ताओं ने सार्वजनिक रूप से उपलब्ध आंकड़ों को कंप्यूटर मॉडलिंग की पूर्वानुमानित

कंप्यूटर मॉडलिंग से आंकड़ों की गणना

क्षमताओं के साथ जोड़कर सटीक अनुमान लगाया कि दुनिया भर में

भूजल भंडारण क्षमता लगभग 17 घन किलोमीटर प्रति वर्ष की दर से गायब हो रही है। एक घन मीटर में 1000 लीटर पानी होता है। इस गिरावट का लगभग 75 फीसदी हिस्सा खेती और शहरी क्षेत्रों में हो रहा है। शोध के अनुमानों के अनुसार दुनिया भर में 77 प्रतिशत जमीन धंसने के लिए मानवीय गतिविधियां जिम्मेदार हैं, जिनमें से 60 प्रतिशत भूजल दोहन के कारण है।

उपयोग से प्रदूषण के कारण भूजल संसाधनों की क्षति और कमी होती है। नेचर कम्युनिकेशंस पत्रिका में प्रकाशित

अध्ययन में डीआरआई, कोलोराडो स्टेट यूनिवर्सिटी और मिसौरी यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के शोधकर्ताओं ने पता लगाया कि कैसे भूजल निकाले जाने से भू-धंसाव और जलभृत के पतन में बढ़ोतरी हो रही है। भूजल की कमी आमतौर पर जमीन से पानी के लगातार पंपिंग के कारण होती है। हम जलभृतों से लगातार भूजल पंप करते रहते हैं और इसके पास खुद को फिर से भरने के लिए पर्याप्त समय नहीं होता है। कृषि आवश्यकताओं के लिए बड़ी मात्रा में भूजल की आवश्यकता होती है।

कोलोराडो स्टेट यूनिवर्सिटी के प्रमुख अध्ययनकर्ता फहीम हसन के अनुसार भू-धंसाव को रोकना संभव नहीं है। इसको रोकने का एकमात्र तरीका भूजल निकासी का उचित प्रबंधन है।

पानी के दुरुपयोग पर दिया कार्रवाई करने का निर्देश

जासं, नई दिल्ली: छतरपुर एन्क्लेव फेज-2 में पानी के दुरुपयोग करने से जुड़े एक पत्र का संज्ञान लेकर नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) ने दिल्ली जल बोर्ड (डीजेबी) को मामले पर विचार कर कार्रवाई करने का आदेश दिया है। एनजीटी चेयरमैन न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव की पीठ ने कहा कि मामले पर डीजेबी के सक्षम अधिकारी की ओर से परीक्षण करने की जरूरत है। ऐसे में डीजेबी के सदस्य सचिव को तीन महीने में कार्रवाई करने का निर्देश दिया जाता है। महरौली निवासी शिकायतकर्ता ओमवती ने एनजीटी को भेजे पत्र में आरोप लगाया है कि छतरपुर एन्क्लेव फेज-2 में पानी का न सिर्फ दुरुपयोग किया जा रहा है, बल्कि दो से तीन अवैध बोरिंग के से भूजल दोहन भी हो रहा है। पीने के पानी का इस्तेमाल फार्म हाउस में खेती के लिए किया जा रहा है। सरकारी बोरिंग को कुछ लोगों ने अपने नियंत्रण में लिया है और इससे दूसरे को पानी नहीं मिल रहा।

पल्ला से रोज़ाना मिल सकेगा 40 एमजीडी पानी



पल्ला में 8 एमजीडी कपैसिटी वाला मास्टर बैलेंसिंग रिजर्वॉयर तैयार किया जा रहा है, जल मंत्री आतिशी ने बुधवार को रिजर्वॉयर का इंसपेक्शन किया

■ प्रमुख संवाददाता, नई दिल्ली

पल्ला में 8 एमजीडी कपैसिटी वाला मास्टर बैलेंसिंग रिजर्वॉयर तैयार किया जा रहा है, जिससे दिल्ली में रोज़ाना करीब 40 एमजीडी पानी सप्लाई होगा। दिल्ली सरकार में जल मंत्री आतिशी ने बुधवार को रिजर्वॉयर का इंसपेक्शन किया। इसके साथ ही उन्होंने फ्लड प्लेन प्रोजेक्ट का भी इंसपेक्शन किया। इस दौरान पाया गया कि पल्ला फ्लड प्रोजेक्ट के चलते वहां आसपास के भूजल स्तर में 1.2 मीटर बढ़ोतरी हुई है।

जल मंत्री आतिशी ने कहा कि दिल्ली में सभी घरों में 24 घंटे पानी उपलब्ध कराने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है। पल्ला फ्लड प्लेन एरिया करीब 40 एकड़ में है। जिसमें से 26 एकड़ में एक तालाब बनाया गया है, जहां पानी को रिस्टोर कर ग्राउंड वॉटर रिचार्ज किया जाता

**जल मंत्री ने
कहा, घरों में
24 घंटे पानी
उपलब्ध कराने
की कोशिश है**

है। 2022-23 में इस तालाब से 740 मिलियन गैलन ग्राउंड वॉटर रिचार्ज हुआ है। इससे आसपास के क्षेत्रों में ग्राउंड वॉटर लेवल में भी बढ़ोतरी हुई है। करीब 1.2 मीटर ग्राउंड वॉटर में बढ़ोतरी का रेकॉर्ड किया गया है। ग्राउंड वॉटर में बढ़ोतरी का पता लगाने के लिए 33 पीजोमीटर लगाए गए हैं। पल्ला फ्लड प्लेन एरिया में ही

200 ट्यूबवैल्स लगाने का भी प्लान है। अबतक इसमें से 60 ट्यूबवैल्स लगाए जा चुके हैं।

उनका कहना था कि दिल्ली में लोगों को 24 घंटे पानी उपलब्ध हो सके, इसके लिए पल्ला में ही 8 एमजीडी

कैपसिटी का मास्टर बैलेंसिंग रिजर्वॉयर (एमबीआर) भी बनवाया जा रहा है। इस रिजर्वॉयर से रोज़ाना करीब 40 एमजीडी पानी सप्लाई होगा। रिजर्वॉयर से रोज़ाना पांच बार पानी को रिचार्ज किया जाएगा। यही पानी रिचार्ज कर पीने के लिए सप्लाई किया जाएगा।

जल मंत्री ने पल्ला स्थित मास्टर बैलेंसिंग रिजर्वॉयर व फ्लड प्लान प्रोजेक्ट का किया निरीक्षण

हर घर 24 घंटे साफ पानी पहुंचाने की दिशा में युद्धस्तर पर काम कर रही दिल्ली सरकार : आतिशी

हरिभूमि ब्यूज ॥ नई दिल्ली

दिल्ली में हर घर 24 घंटे साफ पानी पहुंचाने की दिशा में दिल्ली सरकार युद्धस्तर पर काम कर रही है। यह बात बुधवार को दिल्ली की जल मंत्री आतिशी ने पल्ला स्थित मास्टर बैलेंसिंग रिजर्वॉयर और फ्लड प्लेन प्रोजेक्ट का दौरा करने के दौरान कही। बता दें कि पल्ला में केजरीवाल सरकार 8 एमजीडी का यूजीआर तैयार करवा रही है जो अपनी पूरी क्षमता पर प्रतिदिन 40 एमजीडी पानी सप्लाई कर सकेगा।

निरीक्षण के दौरान जल मंत्री आतिशी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि बच्चे हुए काम को समाप्त कर जल्द इस रिजर्वॉयर को शुरू किया जाए। उल्लेखनीय है कि, केजरीवाल सरकार का पल्ला



भूजल स्तर में बढ़ोतरी की मात्रा जानने के लिए लगाए गए 33 पीजोमीटर

भूजल स्तर में बढ़ोतरी की मात्रा का पता लगाने के लिए 33 पीजोमीटर भी लगाए गए हैं। पल्ला फ्लड प्लेन परियोजना का मुख्य उद्देश्य बाढ़ के पानी का संवय करना है, ताकि साल भर इस संचित किए गए पानी का इस्तेमाल भूजल स्तर को बेहतर बनाने के लिए किया जा सके। इस परियोजना के सफल नतीजे देखने को मिले हैं, जिससे साबित होता है कि इस परियोजना से ग्राउंड वाटर तेजी से रिचार्ज हो रहा है। आतिशी ने कहा कि यह प्रोजेक्ट सिर्फ दिल्ली ही नहीं बल्कि पूरे देश के सूखाग्रस्त और पानी की किल्लत झेल रहे राज्यों के लिए एक बेहतरीन उदाहरण साबित होगा।

फ्लड प्लेन प्रोजेक्ट, लगातार चौथे साल भी सफल रहा है और

यहां भूजल स्तर में 1.2 मीटर तक की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। पल्ला

फ्लड प्लेन प्रोजेक्ट के तहत 26 एकड़ में फैले तालाब के साल

पल्ला बाढ़ क्षेत्र में 200 में से 60 ट्यूबवेल्स हो गए स्थापित

जल मंत्री आतिशी ने कहा कि जल संवयन के बाद पल्ला बाढ़ क्षेत्र में भूजल स्तर लगातार बढ़ रहा है। साथ ही यहां भूजल का शहर की ओर जाना एक अच्छा संकेत है। ऐसे में सरकार की योजना यहां 200 ट्यूबवेल स्थापित करने की है। अब तक 60 ट्यूबवेल हुए स्थापित किए जा चुके हैं और बाकी भी जल्द स्थापित कर लिये जाएंगे। यहां से उत्पादित किए जा रहे पानी के जरिए शहर के कई हिस्सों में पानी की मांग को पूरा करने में मदद मिलेगी। और हर जरूरतमंद तक साफ पानी पहुंचा सकेगा।

पल्ला में 8 एमजीडी का एमबीआर भी हो रहा है तैयार

जल मंत्री आतिशी ने बताया कि दिल्ली सरकार पल्ला में 8 एमजीडी का एमबीआर तैयार करवा रही है। जो लगभग बनकर तैयार है और बहुत जल्द काम करना शुरू कर देगा। अपनी पूरी क्षमता में ये जलाशय प्रतिदिन लगभग 5 बार रिचार्ज होकर 40 एमजीडी पानी सप्लाई कर सकेगा। केजरीवाल सरकार का उद्देश्य इस पानी को शहर के उन हिस्सों तक पहुंचाना है जहां पानी की कमी है।

2022-23 में 740 मिलियन गैलन ग्राउंड वाटर रिचार्ज हुआ है। लगातार चौथे साल भी सफल रहा केजरीवाल सरकार का पल्ला फ्लड प्लेन प्रोजेक्ट, भूजल स्तर में 1.2 मीटर तक की बढ़ोतरी दर्ज की गई। आतिशी ने कहा कि राजधानी से गुजरने वाली यमुना

नदी में मॉनसून के दौरान लगभग हर साल बाढ़ आती है, जिसमें करोड़ों लीटर पानी यमुना से होते हुए बह जाता था। ऐसे में केजरीवाल सरकार ने चार साल पहले मानसून के मौसम में नदी से गुजरने वाले इस अतिरिक्त बाढ़ के पानी को इकट्ठा करने के लिए

यमुना नदी के पास मौजूद बाढ़ के मैदान में पर्यावरण के अनुकूल पल्ला प्रोजेक्ट कि शुरुआत की थी। इसके तहत 26 एकड़ का एक तालाब बनाया गया, जहां बाढ़ के पानी का संचय होता है। इसका इस्तेमाल राजधानी में भूजल को बढ़ाने के लिए किया जा रहा है।